अध्याय तीन

लोग

जनसंख्या की वृद्धि

जिले की जनसंख्या की सबसे पहली गणना अवध प्रान्त की जनगणना के समय 1869 में हुई थी। उस समय जनसंख्या 9,32,959 थी (इस संख्या में सीतापुर की सैनिक छावनी के सैनिक तथा अस्थायी रूप से आये हुये कुछ लोग भी सम्मिलित कर लिये गये थे)। जिले का क्षेत्रफल 2,249 वर्गमील था, जिससे जनसंख्या की औसत सघनता 414.8 व्यक्ति प्रति वर्गमील हो गई थी। अवध के अन्य जिलों की तुलना में यह संख्या बहुत कम थी, किन्तु हरदोई, खीरी अथवा बहराइच से कहीं ज्यादा थी। केवल सदरपुर परगने की, जो बाराबंकी जिले से लगा हुआ है, जनसंख्या की सघनता 500 व्यक्तियों से अधिक थी। उस समय इस जिले में 2,039 ग्राम थे और इनमें से 1,921 ग्रामों की जनसंख्या एक हजार से कम थी, इक्यानवे ग्रामों में एक से दो हजार तक लोग रहते थे और खैराबाद, लहरपुर, बिसवां, सीतापुर, महमूदाबाद और पैंतेपुर के 5,000 से अधिक जनसंख्या वाले नगरों सहित 27 ग्रामों में रहने वालों की संख्या 2,000 से अधिक थी।

1881 में जो अगली जनगणना की गई उससे पता चला कि पिछली जनगणना की अपेक्षा इस जनगणना में 25,292 व्यक्तियों की संख्या अधिक थी तथा कुल जनसंख्या 9,58,251 हो गई। अवध के सभी उत्तरी जिलों में जनसंख्या में वृद्धि हुई, किन्तु हरदोई, खीरी और घाघरा के उत्तरी संभाग वाले जिलों में यह वृद्धि उल्लेखनीय रही। इस जिले (सीतापुर) की सघनता बढ़कर 425.6 व्यक्ति प्रति वर्ग मील हो गई, किन्तु तो भी यह संख्या बहुत कम रही। ग्रामों की संख्या बढ़कर 2,308 हो गई, जिनमें से 2,198 ग्रामों में एक हजार से कम लोग रहते थे, पिछली जनगणना की भांति इक्यानवे ग्रामों में 1,000 से 2,000 तक लोग रहते थे और केवल उन्नीस ग्राम ऐसे थे, जिनकी जनसंख्या 2,000 व्यक्तियों से अधिक थी। नगरों की संख्या पूर्ववत रही, किन्तु लहरपुर और खैराबाद, जिनकी जनसंख्या कुछ कम हो गई और पैंतेपुर को छोड़कर, जहां कोई अन्तर नहीं पड़ा, अन्य नगरों की जनसंख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई।

आगामी दस वर्षों के दौरान मौसम अच्छा रहा और गम्भीर रोगों का प्रकोप बहुत कम हुआ, जिसके कारण यहां के लोग अपेक्षाकृत अधिक संपन्न रहे और जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई, जिसके फलस्वरूप 1891 की जनगणना में व्यक्तियों की संख्या बढ़कर 10,75,413 हो गई और जनसंख्या की सघनता बढ़कर 476.9 हो गई, यद्यपि अवध के अन्य जिलों की तुलना में इस जिले की स्थिति पहले के ही समान रही, क्योंकि सभी स्थानों की जनसंख्या में काफी वृद्धि हुई थी। पूरे प्रान्त की तुलना में औसत वृद्धि 10 प्रतिशत थी। जिले के 2,328 ग्रामों और नगरों में से 158 में एक हजार से अधिक निवासी थे और इनमें से बाइस में दो हजार से अधिक लोग रहते थे। नगरों में सीतापुर की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई। यही हाल लहरपुर और महमूदाबाद नगरों का रहा, किन्तु खैराबाद एवं बिसवां की जनसंख्या में विशेष रूप से कमी हुई और पैंतेपुर की जनसंख्या घटकर 5000 से भी कम हो गई।

अगली जनगणना 1901 में की गयी जिसके अनुसार जिले की जनसंख्या 11,75,473 थी। इससे पिछली गणना से 1,00,060 की वृद्धि होने का पता चलता है। इस बार सीतापुर की जनसंख्या में अवध के अन्य जिलों की अपेक्षा काफी तेजी से वृद्धि हुई। संभवतः इसका कारण यह था कि 1897 के अकाल का इस जिले पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा। 9.3 प्रतिशत की वृद्धि होने के कारण जनसंख्या की सघनता बढ़कर 432.8 व्यक्ति प्रति वर्ग मील हो गई तथापि ये आंकड़े अवध के अन्य जिलों से कम ही थे। क्योंकि खीरी, बहराइच, गोंडा और हरदोई को छोड़कर अन्य जिलों में सघनता अधिकतर बढ़ गयी थी। इस जिले की जनसंख्या में वर्ष 1901 से 1951 की अवधि में समग्र रूप से वृद्धि हुई, जैसा कि नीचे दिये गये विवरण से प्रकट होता है:—

जनसंख्या				अन्तर		
जनगणना वर्ष	कुल	ग्रामीण	नागर	कुल	ग्रामीण	नागर
1	2	3	4	5	6	7
1901	11,75,473	10,96,763	78,710	..	..	..
1911	10,38,996	10,64,149	74,847	−36,477	−32,614	−3,863
				(−3.1)	(−3.0)	(−4.9)

क्रमश